विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-२२/१०/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: नवम: पाठनाम सत्सङ्गति:

पाठ्यांश:-

पुत्र:- किं मनुष्येषु संसर्गस्यापि प्रभाव: भवति ?

माता – आम् य: यादृशेन पुरुषेण सह संगति: करोति यादृशेन पुरुषेण सह तिष्ठति , उपविशति , खादति ,आलाप- संलापौ च कुरुते तस्य तादृश: एव स्वभावो भवति । यदि सज्जनै : सह संगति भविष्यति तर्हि दुर्जनता अपगमिष्यति ।

पुत्र:- मात:! सत्यम् अतएव नीतिकरा: कथयन्ति 'संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति'।

शब्दार्था:

संसर्गस्यापि – साथ में रहने का , यादृशेन – जैसे , आम् – हां

उपविशति – बैठता है , आलाप- संलापौ – बातचीत , तर्हि -तो

तादृश: - वैसा , अपगमिष्यति – चला जाएगा

संसर्गजा - किसी के साथ में रहने से उत्पन्न होने वाला

अर्थ –

पुत्र:-क्या मनुष्यों पर संगति का भी प्रभाव पडता है?

माता- हां जो जिस पुरुष की संगति करता है जैस पुरुष के रहता है,बैठता है,खाता है और बातचीत करता है।उसका वैसा ही स्वभाव होता है।यदि सज्जनों के साथ संगति होगी ।

पुत्र -मा। सच में अत: नीतिकार कहते हैं संगति से ही दोष-

गुण उत्पन्न होते हैं।